قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

وَلَوْ اَنَّنَا

पारा - 8

وَلَوْ	اَنَّنَا	نَزَّلْنَآ	اِلَيْهِمُ	الْمَلٰٓئِكَةَ	وَكَلَّمَهُمُ	الْمَوْتٰى
और अगर	बेशक हम	उतारते हम	तरफ़ उनके	फ़रिश्ते	और कलाम करते उनसे	मुर्दे

وَحَشَرْنَا	عَلَيْهِمْ	كُلَّ	شَيْءٍ	قُبُلًا	مَّا	كَانُوْا	لِيُؤْمِنُوْٓا	اِلَّآ
और इकट्ठा कर लाते हम	उन पर	हर	चीज़ को	सामने	ना	थे वो	कि वो ईमान लाते	मगर

اَنْ	يَّشَآءَ	اللّٰهُ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	يَجْهَلُوْنَ (111)	وَكَذٰلِكَ	جَعَلْنَا
ये कि	चाहता	अल्लाह	और लेकिन	अक्सर उनके	वो जहालत बरत्ते हैं	और इसी तरह	बनाए हमने

لِكُلِّ نَبِيٍّ	عَدُوًّا	شَيٰطِيْنَ	الْاِنْسِ	وَالْجِنِّ	يُوْحِيْ	بَعْضُهُمْ
हर नबी के लिए	दुश्मन	शयातीन	इंसानों	और जिन्नों (में से)	डालता है	बाज़ उनका

اِلٰى بَعْضٍ	زُخْرُفَ	الْقَوْلِ	غُرُوْرًا ؕ	وَلَوْ	شَآءَ	رَبُّكَ	مَا
तरफ़ बाज़ के	मुलम्मा की हुई	बात	धोखा देने के लिए	और अगर	चाहता	रब आपका	ना

فَعَلُوْهُ	فَذَرْهُمْ	وَمَا	يَفْتَرُوْنَ (112)	وَلِتَصْغٰٓى	اِلَيْهِ	اَفْـِٕدَةُ
वो करते उसे	पस छोड़ दीजिए उन्हें	और जो	वो झूठ गढ़ते हैं	और ताकि माइल हों	तरफ़ उसके	दिल

الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	وَلِيَرْضَوْهُ	وَلِيَقْتَرِفُوْا	مَا	هُمْ
उनके जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	और ताकि वो राज़ी हों उससे	और ताकि वो कमाई करें	जो	वो

مُّقْتَرِفُوْنَ (113)	اَفَغَيْرَ	اللّٰهِ	اَبْتَغِيْ	حَكَمًا	وَّهُوَ	الَّذِيْٓ
कमाई करने वाले हैं	क्या फिर सिवाए	अल्लाह के	मैं तलाश करूं	कोई फ़ैसला करने वाला	हालांकि वो ही है	जिसने

اَنْزَلَ	اِلَيْكُمُ	الْكِتٰبَ	مُفَصَّلًا ؕ	وَالَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ	الْكِتٰبَ
नाज़िल की	तरफ़ तुम्हारे	किताब	तफ़सील से	और वो लोग जो	दी हमने उन्हें	किताब

يَعْلَمُوْنَ	اَنَّهٗ	مُنَزَّلٌ	مِّنْ رَّبِّكَ	بِالْحَقِّ	فَلَا تَكُوْنَنَّ
वो जानते हैं	कि बेशक वो	नाज़िल करदा है	आपके रब की तरफ़ से	साथ हक़ के	पस हरगिज़ ना आप हों

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿114﴾	وَتَمَّتْ	كَلِمَتُ	رَبِّكَ	صِدْقًا	وَّعَدْلًا ؕ
शक करने वालों में से	और पूरी होगई	बात	आपके रब की	सच	और इंसाफ़ की

لَا مُبَدِّلَ	لِكَلِمٰتِهٖ ۚ	وَهُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿115﴾	وَاِنْ	تُطِعْ
नहीं कोई बदलने वाला	उसके कलिमात को	और वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	और अगर	आप इताअत करें

اَكْثَرَ	مَنْ	فِي الْاَرْضِ	يُضِلُّوْكَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	اِنْ	يَّتَّبِعُوْنَ
अक्सरियत की	जो	ज़मीन में हैं	वो भटकादेंगे आपको	अल्लाह के रास्ते से	नहीं	वो पैरवी करते

اِلَّا	الظَّنَّ	وَاِنْ	هُمْ	اِلَّا	يَخْرُصُوْنَ ﴿116﴾	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ
मगर	गुमान की	और नहीं	वो	मगर	वो क़यास अराइयां करते हैं	बेशक	रब आपका	वो

اَعْلَمُ	مَنْ يَّضِلُّ	عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ	وَهُوَ	اَعْلَمُ	بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿117﴾
ज़्यादा जानता है	कौन भटका हुआ है	उसके रास्ते से	और वो	ज़्यादा जानता है	हिदायत पाने वालों को

فَكُلُوْا	مِمَّا	ذُكِرَ	اسْمُ	اللّٰهِ	عَلَيْهِ	اِنْ	كُنْتُمْ	بِاٰيٰتِهٖ
पस खाओ	उसमें से जो	ज़िक्र किया गया	नाम	अल्लाह का	उस पर	अगर	हो तुम	उसकी आयात पर

مُؤْمِنِيْنَ ﴿118﴾	وَمَا	لَكُمْ	اَلَّا	تَاْكُلُوْا	مِمَّا	ذُكِرَ	اسْمُ	اللّٰهِ
ईमान लाने वाले	और क्या है	तुम्हें	कि नहीं	तुम खाते	उसमें से जो	ज़िक्र किया गया	नाम	अल्लाक का

عَلَيْهِ	وَقَدْ	فَصَّلَ	لَكُمْ	مَّا	حَرَّمَ	عَلَيْكُمْ	اِلَّا
उस पर	हालांकि तहक़ीक़	उसने खोल कर बयान किया	तुम्हारे लिए	जो	उसने हराम किया	तुम पर	मगर

مَا	اضْطُرِرْتُمْ	اِلَيْهِ ؕ	وَاِنَّ	كَثِيْرًا	لَّيُضِلُّوْنَ	بِاَهْوَآئِهِمْ
वो जो	मजबूर कर दिए जाओ तुम	तरफ़ उसके	और बेशक	अक्सर लोग	अलबत्ता वो गुमराह करते हैं	अपनी ख़्वाहिशात के ज़रिए

بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	اَعْلَمُ	بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿119﴾	وَذَرُوْا
बग़ैर	इल्म के	बेशक	रब आपका	वो	ज़्यादा जानने वाला है	हद से तजावुज़ करने वालों को	और छोड़ दो

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ظَاهِرَ	الْاِثْمِ	وَبَاطِنَهٗ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَكْسِبُوْنَ	الْاِثْمَ
ज़ाहिरी	गुनाह को	और उसके छुपे को	बेशक	वो लोग जो	कमाते हैं	गुनाह

سَيُجْزَوْنَ	بِمَا	كَانُوْا	يَقْتَرِفُوْنَ (120)	وَلَا	تَاْكُلُوْا	مِمَّا
अनक़रीब वो बदला दिए जाऐंगे	उसका जो	थे वो	वो कमाई करते	और ना	तुम खाओ	उसमें से जो

لَمْ	يُذْكَرِ	اسْمُ	اللّٰهِ	عَلَيْهِ	وَاِنَّهٗ	لَفِسْقٌ ؕ	وَاِنَّ	الشَّيٰطِيْنَ
नहीं	ज़िक्र किया गया	नाम	अल्लाह का	उस पर	और बेशक वो	अलबत्ता गुनाह है	और बेशक	शयातीन

لَيُوْحُوْنَ	اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـِٕهِمْ	لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ	وَاِنْ	اَطَعْتُمُوْهُمْ	اِنَّكُمْ
अलबत्ता वो इल्क़ा करते हैं	तरफ़ अपने दोस्तों के	ताकि वो झगड़ा करें तुमसे	और अगर	इताअत की तुमने उनकी	बेशक तुम

ع 14 11 1

لَمُشْرِكُوْنَ (121) ع	اَوَمَنْ	كَانَ	مَيْتًا	فَاَحْيَيْنٰهُ	وَجَعَلْنَا	لَهٗ
अलबत्ता मुशरिक होगे	क्या भला जो	था	मुर्दा	तो ज़िंदा किया हमने उसे	और बनाया हमने	उसके लिए

نُوْرًا	يَّمْشِيْ	بِهٖ	فِي النَّاسِ	كَمَنْ مَّثَلُهٗ	فِي الظُّلُمٰتِ	لَيْسَ
एक नूर	वो चलता है	साथ उसके	लोगों में	उसकी तरह हो सकता है जो	अंधेरों में है	नहीं है

بِخَارِجٍ	مِّنْهَا ؕ	كَذٰلِكَ	زُيِّنَ	لِلْكٰفِرِيْنَ	مَا	كَانُوْا
निकलने वाला	उनसे	इसी तरह	मुज़य्यन कर दिया गया है	काफ़िरों के लिए	जो	हैं वो

يَعْمَلُوْنَ (122)	وَكَذٰلِكَ	جَعَلْنَا	فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ	اَكٰبِرَ	مُجْرِمِيْهَا
वो अमल करते	और इसी तरह	बनादिया हमने	हर बस्ती में	बड़ों को	मुजरिम उसके

لِيَمْكُرُوْا	فِيْهَا ؕ	وَمَا	يَمْكُرُوْنَ	اِلَّا	بِاَنْفُسِهِمْ	وَمَا
ताकि वो मकर करें	उसमें	और नहीं	वो मकर करते	मगर	अपने नफ़्सों से	और नहीं

يَشْعُرُوْنَ (123)	وَاِذَا	جَآءَتْهُمْ	اٰيَةٌ	قَالُوْا	لَنْ	نُّؤْمِنَ	حَتّٰى
वो शऊर रखते	और जब	आती है उनके पास	कोई निशानी	वो कहते हैं	हरगिज़ नहीं	हम ईमान लाऐंगे	यहां तक कि

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم
وقف منزل

نُؤْتٰى	مِثْلَ	مَآ	اُوْتِيَ	رُسُلُ اللّٰهِ ؕ	اَللّٰهُ	اَعْلَمُ	حَيْثُ
हम दिए जाएं	मानिंद उसके	जो	दिया गया	अल्लाह के रसूलों को	अल्लाह	ज़्यादा जानता है	जहां

يَجْعَلُ	رِسَالَتَهٗ ؕ	سَيُصِيْبُ	الَّذِيْنَ	اَجْرَمُوْا	صَغَارٌ	عِنْدَ اللّٰهِ
वो रखता है	अपनी रिसालत को	अनक़रीब पहुंचेगी	उनको जिन्होंने	जुर्म किए	ज़िल्लत	अल्लाह के यहां

وَعَذَابٌ	شَدِيْدٌۢ	بِمَا	كَانُوْا	يَمْكُرُوْنَ (124)	فَمَنْ	يُّرِدِ
और अज़ाब	शदीद	बवजह उसके जो	थे वो	वो मकर करते	पस जिसे	चाहता है

اللّٰهُ	اَنْ	يَّهْدِيَهٗ	يَشْرَحْ	صَدْرَهٗ	لِلْاِسْلَامِ ۚ	وَمَنْ	يُّرِدْ
अल्लाह	कि	वो हिदायत दे उसे	खोल देता है	सीना उसका	इस्लाम के लिए	और जिसे	वो चाहता है

اَنْ	يُّضِلَّهٗ	يَجْعَلْ	صَدْرَهٗ	ضَيِّقًا	حَرَجًا	كَاَنَّمَا	يَصَّعَّدُ
कि	वो गुमराह करदे उसे	वो कर देता है	सीना उसका	तंग	घुटा हुआ	गोया कि	वो चढ़ता है

فِي السَّمَآءِ ؕ	كَذٰلِكَ	يَجْعَلُ	اللّٰهُ	الرِّجْسَ	عَلَى الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (125)
आसमान में	इसी तरह	डालता है	अल्लाह	नजासत को	ऊपर उनके जो	नहीं वो ईमान लाते

وَهٰذَا	صِرَاطُ	رَبِّكَ	مُسْتَقِيْمًا ؕ	قَدْ	فَصَّلْنَا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ
और ये	रास्ता है	आपके रब का	सीधा	तहक़ीक़	खोलकर बयान की हमने	आयात	उन लोगों के लिए

يَّذَّكَّرُوْنَ (126)	لَهُمْ	دَارُ	السَّلٰمِ	عِنْدَ رَبِّهِمْ	وَهُوَ	وَلِيُّهُمْ
जो नसीहत क़ुबूल करते हैं	उनके लिए	घर है	सलामती का	पास उनके रब के	और वो	दोस्त है उनका

بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (127)	وَيَوْمَ	يَحْشُرُهُمْ	جَمِيْعًا ۚ	يٰمَعْشَرَ
बवजह उसके जो	थे वो	वो अमल करते	और जिस दिन	वो इकट्ठा करेगा उनको	सबके सबको	(तो फ़रमाएगा) ऐ गिरोह

الْجِنِّ	قَدِ	اسْتَكْثَرْتُمْ	مِّنَ الْاِنْسِ ۚ	وَقَالَ	اَوْلِيٰٓؤُهُمْ
जिन्नों के	तहक़ीक़	बहुत ज़्यादा ले लिए तुमने	इंसानों में से	और कहेंगे	दोस्त उनके

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنَ الْاِنْسِ	رَبَّنَا	اسْتَمْتَعَ	بَعْضُنَا	بِبَعْضٍ	وَّ بَلَغْنَآ	اَجَلَنَا
इंसानों में से	ऐ रब हमारे	फ़ायदा उठाया	बाज़ हमारे ने	बाज़ का	और पहुंचे हम	अपनी मुद्दत को

الَّذِيْٓ	اَجَّلْتَ	لَنَا ؕ	قَالَ	النَّارُ	مَثْوٰىكُمْ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ
वो जो	मुक़र्रर की तूने	हमारे लिए	वो फ़रमाएगा	आग	ठिकाना है तुम्हारा	हमेशा रहने वाले हो	उसमें

اِلَّا	مَا	شَآءَ	اللّٰهُ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	حَكِيْمٌ	عَلِيْمٌ (128)	وَ كَذٰلِكَ
मगर	जो	चाहे	अल्लाह	बेशक	रब आपका	बहुत हिक्मत वाला है	ख़ूब इल्म वाला है	और इसी तरह

ع 15 8 2

نُوَلِّيْ	بَعْضَ	الظّٰلِمِيْنَ	بَعْضًا	بِمَا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ (129) ع
हम मुसल्लत कर देते हैं	बाज़	ज़ालिमों को	बाज़ पर	बवजह उसके जो	थे वो	वो कमाई करते

يٰمَعْشَرَ	الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ	اَلَمْ	يَاْتِكُمْ	رُسُلٌ	مِّنْكُمْ	يَقُصُّوْنَ
ऐ गिरोह	जिन्नों के	और इंसानों के	क्या नहीं	आए तुम्हारे पास	कुछ रसूल	तुममें से	जो बयान करते

عَلَيْكُمْ	اٰيٰتِيْ	وَيُنْذِرُوْنَكُمْ	لِقَآءَ	يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ	قَالُوْا	شَهِدْنَا
तुम पर	आयात मेरी	और वो डराते तुम्हें	मुलाक़ात से	तुम्हारे इस दिन की	वो कहेंगे	गवाही देते हैं हम

عَلٰٓى اَنْفُسِنَا	وَغَرَّتْهُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	وَشَهِدُوْا	عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
अपने नफ़्सों पर	और धोखे में डाला उन्हें	ज़िंदगी ने	दुनिया की	और वो गवाही देंगे	अपने नफ़्सों पर

اَنَّهُمْ	كَانُوْا	كٰفِرِيْنَ (130)	ذٰلِكَ	اَنْ	لَّمْ	يَكُنْ	رَّبُّكَ	مُهْلِكَ
कि बेशक वो	थे वो	काफ़िर	ये (इसलिए)	कि	नहीं	है	रब आपका	हलाक करने वाला

الْقُرٰى	بِظُلْمٍ	وَّاَهْلُهَا	غٰفِلُوْنَ (131)	وَلِكُلٍّ	دَرَجٰتٌ	مِّمَّا
बस्तियों को	साथ ज़ुल्म के	जबकि हों उनके रहने वाले	ग़ाफ़िल	और हर एक के लिए	दरजात हैं	उसमें से जो

عَمِلُوْا ؕ	وَمَا	رَبُّكَ	بِغَافِلٍ	عَمَّا	يَعْمَلُوْنَ (132)	وَرَبُّكَ	الْغَنِيُّ
उन्होंने अमल किए	और नहीं	रब आपका	ग़ाफ़िल	उससे जो	वो अमल करते हैं	और रब आपका	बहुत बेनियाज़ है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ذُو الرَّحْمَةِ ؕ	اِنْ	يَّشَاْ	يُذْهِبْكُمْ	وَيَسْتَخْلِفْ	مِنْۢ بَعْدِكُمْ
रहमत वाला है	अगर	वो चाहे	वो ले जाए तुम सबको	और वो जानशीन बना दे	तुम्हारे बाद

مَّا	يَشَآءُ	كَمَآ	اَنْشَاَكُمْ	مِّنْ ذُرِّيَّةِ	قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ؕ (133)	اِنَّ
जिसको	वो चाहे	जैसा कि	उसने उठाया तुम्हें	नस्ल से	दूसरी क़ौम की	बेशक

مَا	تُوْعَدُوْنَ	لَاٰتٍ ۙ	وَّمَآ	اَنْتُمْ	بِمُعْجِزِيْنَ (134)	قُلْ	يٰقَوْمِ
जो	तुम वादा दिए जाते हो	अलबत्ता आने वाला है	और नहीं	तुम	आजिज़ करने वाले	कह दीजिए	ऐ मेरी क़ौम

اعْمَلُوْا	عَلٰى مَكَانَتِكُمْ	اِنِّيْ	عَامِلٌ ۚ	فَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ۙ	مَنْ
अमल करो	अपनी जगह पर	बेशक मैं	अमल करने वाला हूं	पस अनक़रीब	तुम जान लोगे	कौन

تَكُوْنُ	لَهٗ	عَاقِبَةُ	الدَّارِ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُفْلِحُ	الظّٰلِمُوْنَ (135)
है	जिसके लिए	अंजाम है	(आख़िरत के) घर का	बेशक वो	नहीं वो फ़लाह पाते	जो ज़ालिम हैं

وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	مِمَّا	ذَرَاَ	مِنَ الْحَرْثِ	وَالْاَنْعَامِ	نَصِيْبًا
और उन्होंने मुक़र्रर कर लिए	अल्लाह के लिए	उसमें से जो	उसने पैदा किया	खेती से	और मवेशियों से	एक हिस्सा

فَقَالُوْا	هٰذَا	لِلّٰهِ	بِزَعْمِهِمْ	وَهٰذَا	لِشُرَكَآئِنَا ۚ	فَمَا
तो उन्होंने कहा	ये	अल्लाह के लिए है	उनके गुमान के मुताबिक़	और ये	हमारे शरीकों के लिए है	पस जो (हिस्सा)

كَانَ	لِشُرَكَآئِهِمْ	فَلَا	يَصِلُ	اِلَى اللّٰهِ ۚ	وَمَا	كَانَ	لِلّٰهِ
है	उनके शरीकों के लिए	तो नहीं	वो पहुंचता	तरफ़ अल्लाह के	और जो	है	अल्लाह के लिए

فَهُوَ	يَصِلُ	اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ	سَآءَ	مَا	يَحْكُمُوْنَ (136)	وَكَذٰلِكَ
तो वो	वो पहुंच जाता है	तरफ़ उनके शरीकों के	कितना बुरा है	जो	वो फ़ैसला करते हैं	और इसी तरह

زَيَّنَ	لِكَثِيْرٍ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ	قَتْلَ	اَوْلَادِهِمْ	شُرَكَآؤُهُمْ
मुज़य्यन कर दिया	अक्सरियत के लिए	मुशरिकीन में से	क़त्ल करना	अपनी औलाद का	उनके शरीकों ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِيُرْدُوْهُمْ	وَلِيَلْبِسُوْا	عَلَيْهِمْ	دِيْنَهُمْ ؕ	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَا
ताकि वो हलाकत में डालें उन्हें	और ताकि वो मुश्तबा करदें	उन पर	उनके दीन को	और अगर	चाहता	अल्लाह	ना

فَعَلُوْهُ	فَذَرْهُمْ	وَمَا	يَفْتَرُوْنَ (137)	وَقَالُوْا	هٰذِهٖٓ	اَنْعَامٌ
वो करते उसे	पस छोड़ दीजिए उन्हें	और जो कुछ	वो झूठ गढ़ते हैं	और उन्होंने कहा	ये	मवेशी

وَّحَرْثٌ	حِجْرٌ ۖ	لَّا يَطْعَمُهَآ	اِلَّا	مَنْ	نَّشَآءُ	بِزَعْمِهِمْ	وَاَنْعَامٌ
और खेती	ममनूअ हैं	नहीं खा सकता उन्हें	मगर	वो जिसे	हम चाहें	उनके गुमान के मुताबिक़	और कुछ मवेशी

حُرِّمَتْ	ظُهُوْرُهَا	وَاَنْعَامٌ	لَّا يَذْكُرُوْنَ	اسْمَ	اللّٰهِ	عَلَيْهَا
हराम की गईं	पुश्तें उनकी	और कुछ मवेशी	नहीं वो ज़िक्र करते	नाम	अल्लाह का	उन पर

افْتِرَآءً	عَلَيْهِ ؕ	سَيَجْزِيْهِمْ	بِمَا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ (138)	وَقَالُوْا
झूठ गढ़ते हुए	उस पर	अनक़रीब वो बदला देगा उन्हें	बवजह उसके जो	थे हो	वो झूठ गढ़ते	और उन्होंने कहा

مَا	فِيْ بُطُوْنِ	هٰذِهِ	الْاَنْعَامِ	خَالِصَةٌ	لِّذُكُوْرِنَا	وَمُحَرَّمٌ
जो कुछ	पेटों में है	इन	मवेशियों के	(वो) ख़ालिस है	हमारे मर्दों के लिए	और हराम किया गया है

عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ	وَاِنْ	يَّكُنْ	مَّيْتَةً	فَهُمْ	فِيْهِ	شُرَكَآءُ ؕ
हमारी बीवियों पर	और अगर	हो वो	मुर्दार	तो वो	उसमें	सब शरीक हैं

سَيَجْزِيْهِمْ	وَصْفَهُمْ ؕ	اِنَّهٗ	حَكِيْمٌ	عَلِيْمٌ (139)	قَدْ	خَسِرَ
अनक़रीब वो बदला देगा उन्हें	उनके बयान का	बेशक वो	बहुत हिक्मत वाल है	ख़ूब इल्म वाला है	तहक़ीक़	ख़सारे में रहे

الَّذِيْنَ	قَتَلُوْٓا	اَوْلَادَهُمْ	سَفَهًا	بِغَيْرِ	عِلْمٍ	وَّحَرَّمُوْا	مَا
वो जिन्होंने	क़त्ल किया	अपनी औलाद को	नादानी से	बग़ैर	इल्म के	और हराम क़रार दिया	उसको जो

رَزَقَهُمُ	اللّٰهُ	افْتِرَآءً	عَلَى اللّٰهِ ؕ	قَدْ	ضَلُّوْا	وَمَا	كَانُوْا
रिज़्क़ दिया उनको	अल्लाह ने	झूठ गढ़ते हुए	अल्लाह पर	तहक़ीक़	वो भटक गए	और ना	थे वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 16 11 3

مُهْتَدِيْنَ ﴿140﴾ ع	وَهُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْشَاَ	جَنّٰتٍ	مَّعْرُوْشٰتٍ	وَّغَيْرَ
हिदायत पाने वाले	और वो ही है	जिसने	पैदा किए	बाग़ात	छतरियों पर चढ़ाए हुए	और बग़ैर

مَعْرُوْشٰتٍ	وَّالنَّخْلَ	وَالزَّرْعَ	مُخْتَلِفًا	اُكُلُهٗ	وَالزَّيْتُوْنَ
छतरियों पर चढ़ाए हुए	और खजूर के दरख़्त	और खेती	मुख़्तलिफ़ हैं	फल उसके	और ज़ैतून

وَالرُّمَّانَ	مُتَشَابِهًا	وَّغَيْرَ	مُتَشَابِهٍ ؕ	كُلُوْا	مِنْ ثَمَرِهٖٓ	اِذَآ	اَثْمَرَ
और अनार	आपस में मिलते-जुलते	और ना	मिलते-जुलते	खाओ	उसके फल में से	जब वो	फल लाए

وَاٰتُوْا	حَقَّهٗ	يَوْمَ	حَصَادِهٖ ۖ	وَلَا	تُسْرِفُوْا ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ
और दो	हक़ उसका	दिन	उसकी कटाई के	और ना	तुम इसराफ़ करो	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता

الْمُسْرِفِيْنَ ﴿141﴾ لا	وَمِنَ الْاَنْعَامِ	حَمُوْلَةً	وَّفَرْشًا ؕ	كُلُوْا	مِمَّا
इसराफ़ करने वालों को	और मवेशियों में से हैं	कुछ बोझ उठाने वाले	और कुछ ज़मीन से लगे हुए	खाओ	उसमें से जो

رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ	وَلَا	تَتَّبِعُوْا	خُطُوٰتِ	الشَّيْطٰنِ ؕ	اِنَّهٗ	لَكُمْ	عَدُوٌّ
रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	और ना	तुम पैरवी करो	क़दमों की	शैतान के	बेशक वो	तुम्हारे लिए	दुश्मन है

مُّبِيْنٌ ﴿142﴾ لا	ثَمٰنِيَةَ	اَزْوَاجٍ ۚ	مِنَ الضَّاْنِ	اثْنَيْنِ	وَمِنَ الْمَعْزِ
खुल्लम-खुल्ला	आठ	क़िस्में हैं	भेड़ में से	दो	और बकरी में से

اثْنَيْنِ ؕ	قُلْ	ءٰٓالذَّكَرَيْنِ	حَرَّمَ	اَمِ	الْاُنْثَيَيْنِ	اَمَّا	اشْتَمَلَتْ
दो	कह दीजिए	क्या दो नर	उसने हराम किए	या	दो मादा	या वो जो	मुश्तमिल हैं

عَلَيْهِ	اَرْحَامُ	الْاُنْثَيَيْنِ ؕ	نَبِّئُوْنِيْ	بِعِلْمٍ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿143﴾ لا
उस पर	रहम	दोनों मादा के	बताओ मुझे	साथ इल्म के	अगर	हो तुम	सच्चे

وَمِنَ الْاِبِلِ	اثْنَيْنِ	وَمِنَ الْبَقَرِ	اثْنَيْنِ ؕ	قُلْ	ءٰٓالذَّكَرَيْنِ	حَرَّمَ
और ऊंट में से	दो	और गाय में से	दो	कह दीजिए	क्या दो नर	उसने हराम किए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمِ	الْاُنْثَيَيْنِ	اَمَّا	اشْتَمَلَتْ	عَلَيْهِ	اَرْحَامُ	الْاُنْثَيَيْنِ ؕ	اَمْ
या	दो मादा	या वो जो	मुश्तमिल हैं	जिस पर	रहम	दोनों मादा के	या

كُنْتُمْ	شُهَدَآءَ	اِذْ	وَصّٰىكُمُ	اللّٰهُ	بِهٰذَا ۚ	فَمَنْ	اَظْلَمُ
थे तुम	गवाह	जब	ताकीद की तुम्हें	अल्लाह ने	उसकी	तो कौन	बड़ा ज़ालिम है

مِمَّنِ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	لِّيُضِلَّ	النَّاسَ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ
उससे जो	गढ़ले	अल्लाह पर	झूठ	ताकि वो भटकादे	लोगों को	बग़ैर	इल्म के

ع 17 4 4

اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ (144) ع	قُلْ	لَّآ اَجِدُ	فِىْ مَآ
बेशक	अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	कह दीजिए	नहीं मैं पाता	उसमें जो

اُوْحِىَ	اِلَىَّ	مُحَرَّمًا	عَلٰى طَاعِمٍ	يَّطْعَمُهٗٓ	اِلَّآ	اَنْ	يَّكُوْنَ
वही की गई	मेरी तरफ़	हराम की गई(कोई चीज़)	किसी खाने वाले पर	जिसे वो खाए	मगर	ये कि	वो हो

مَيْتَةً	اَوْ	دَمًا	مَّسْفُوْحًا	اَوْ	لَحْمَ	خِنْزِيْرٍ	فَاِنَّهٗ	رِجْسٌ	اَوْ
मुर्दार	या	ख़ून	बहाया हुआ	या	गोश्त	ख़िंज़ीर का	तो बेशक वो	नापाक है	या (हो वो)

فِسْقًا	اُهِلَّ	لِغَيْرِ	اللّٰهِ	بِهٖ ۚ	فَمَنِ	اضْطُرَّ	غَيْرَ	بَاغٍ	
नाफ़रमानी	कि पुकारा गया	वास्ते ग़ैर	अल्लाह के	जिसे	तो जो कोई	मजबूर किया गया	ना	सरकशी करने वाला	

وَّلَا	عَادٍ	فَاِنَّ	رَبَّكَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (145)	وَعَلَى الَّذِيْنَ
और ना	हद से बढ़ने वाला	तो बेशक	रब आपका	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और उन लोगों पर जो

هَادُوْا	حَرَّمْنَا	كُلَّ	ذِىْ ظُفُرٍ ۚ	وَمِنَ الْبَقَرِ	وَالْغَنَمِ	حَرَّمْنَا
यहूदी बन गए	हराम करदिया हमने	हर	नाख़ून वाला (जानवर)	और गाय में से	और बकरी में से	हराम की हमने

عَلَيْهِمْ	شُحُوْمَهُمَآ	اِلَّا	مَا	حَمَلَتْ	ظُهُوْرُهُمَآ	اَوِ	الْحَوَايَآ
उन पर	चर्बियां उन दोनों की	मगर	जो	उठाया हो	उन दोनों की पुश्तों ने	या	आंतों ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَوْ	مَا	اخْتَلَطَ	بِعَظْمٍ ؕ	ذٰلِكَ	جَزَيْنٰهُمْ	بِبَغْيِهِمْ ۖ	وَاِنَّا
या	जो	मिल जाए	साथ हड्डी के	ये	बदला दिया हमने उन्हें	बवजह उनकी सरकशी के	और बेशक हम

لَصٰدِقُوْنَ (146)	فَاِنْ	كَذَّبُوْكَ	فَقُلْ	رَّبُّكُمْ	ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ
अलबत्ता सच्चे हैं	फिर अगर	वो झुठलाएं आपको	तो कह दीजिए	रब तुम्हारा	वसीअ रहमत वाला है

وَلَا	يُرَدُّ	بَاْسُهٗ	عَنِ الْقَوْمِ	الْمُجْرِمِيْنَ (147)	سَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ
और नहीं	फेरा जा सकता	अज़ाब उसका	उन लोगों से	जो मुजरिम हैं	अनक़रीब कहेंगे	वो जिन्होंने

اَشْرَكُوْا	لَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَآ	اَشْرَكْنَا	وَلَآ	اٰبَآؤُنَا	وَلَا
शिर्क किया	अगर	चाहता	अल्लाह	ना	शिर्क करते हम	और ना	आबा ओ अजदाद हमारे	और ना

حَرَّمْنَا	مِنْ شَيْءٍ ؕ	كَذٰلِكَ	كَذَّبَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	حَتّٰى
हराम करते हम	कोई चीज़	इसी तरह	झुठलाया	उन्होंने जो	उनसे पहले थे	यहा तक कि

ذَاقُوْا	بَاْسَنَا ؕ	قُلْ	هَلْ	عِنْدَكُمْ	مِّنْ عِلْمٍ	فَتُخْرِجُوْهُ
उन्होंने चख लिया	अज़ाब हमारा	कह दीजिए	क्या है	पास तुम्हारे	कोई इल्म	पस तुम निकालो उसे

لَنَا ؕ	اِنْ	تَتَّبِعُوْنَ	اِلَّا	الظَّنَّ	وَاِنْ	اَنْتُمْ	اِلَّا	تَخْرُصُوْنَ (148)
हमारे लिए	नहीं	तुम पैरवी करते	मगर	ज़न/गुमान की	और नहीं	तुम	मगर	तुम क़यास आराइयां करते

قُلْ	فَلِلّٰهِ	الْحُجَّةُ	الْبَالِغَةُ ۚ	فَلَوْ	شَآءَ	لَهَدٰىكُمْ
कह दीजिए	पस अल्लाह ही के लिए है	हुज्जत	पहुंचने वाली	फिर अगर	वो चाहता	अलबत्ता हिदायत दे देता तुम्हें

اَجْمَعِيْنَ (149)	قُلْ	هَلُمَّ	شُهَدَآءَكُمُ	الَّذِيْنَ	يَشْهَدُوْنَ	اَنَّ
सबके-सबको	कह दीजिए	हाज़िर करो	अपने गवाहों को	उनको जो	गवाही देते हैं	कि बेशक

اللّٰهَ	حَرَّمَ	هٰذَا ۚ	فَاِنْ	شَهِدُوْا	فَلَا	تَشْهَدْ	مَعَهُمْ ۚ
अल्लाह ने	हराम किया है	उसे	फिर अगर	वो गवाही दे दें	तो ना	आप गवाही दें	साथ उनके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	تَتَّبِعْ	اَهْوَآءَ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَالَّذِيْنَ
और ना	आप पैरवी करें	ख़्वाहिशात की	उनकी जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	और (ना) उनकी जो

ع 18 6 5

لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ	وَهُمْ	بِرَبِّهِمْ	يَعْدِلُوْنَ (150) ع	قُلْ	تَعَالَوْا
नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	और वो	साथ अपने रब के	वो बराबर क़रार देते हैं	कह दीजिए	आओ

اَتْلُ	مَا	حَرَّمَ	رَبُّكُمْ	عَلَيْكُمْ	اَلَّا	تُشْرِكُوْا	بِهٖ
मैं पढ़ सुनाऊं	जो	हराम किया	तुम्हारे रब ने	तुम पर	कि ना	तुम शरीक ठहराओ	साथ उसके

شَيْـًٔا	وَّبِالْوَالِدَيْنِ	اِحْسَانًا ج	وَلَا	تَقْتُلُوْٓا	اَوْلَادَكُمْ	مِّنْ اِمْلَاقٍ ط
किसी चीज़ को	और साथ वालिदैन के	एहसान करना	और ना	तुम क़त्ल करो	अपनी औलाद को	तंगदस्ती (के डर) से

نَحْنُ	نَرْزُقُكُمْ	وَاِيَّاهُمْ ج	وَلَا	تَقْرَبُوا	الْفَوَاحِشَ	مَا
हम	रिज़्क़ देते हैं तुम्हें	और उन्हें भी	और ना	तुम क़रीब जाओ	बेहयाई के कामों के	जो

ظَهَرَ	مِنْهَا	وَمَا	بَطَنَ ج	وَلَا	تَقْتُلُوا	النَّفْسَ	الَّتِيْ
ज़ाहिर हों	उनमें से	और जो	छुपे हों	और ना	तुम क़त्ल करो	उस जान को	वो जो

حَرَّمَ	اللّٰهُ	اِلَّا	بِالْحَقِّ ط	ذٰلِكُمْ	وَصّٰكُمْ	بِهٖ	لَعَلَّكُمْ
हराम की	अल्लाह ने	मगर	साथ हक़ के	ये है	उसने ताकीद की है तुम्हें	जिसकी	ताकि तुम

تَعْقِلُوْنَ (151)	وَلَا	تَقْرَبُوْا	مَالَ	الْيَتِيْمِ	اِلَّا	بِالَّتِيْ	هِيَ
तुम अक़्ल से काम लो	और ना	तुम क़रीब जाओ	माले	यतीम के	मगर	साथ (उस तरीक़े के) जो	वो

اَحْسَنُ	حَتّٰى	يَبْلُغَ	اَشُدَّهٗ ج	وَاَوْفُوا	الْكَيْلَ	وَالْمِيْزَانَ
अच्छा है	यहां तक कि	वो पहुंच जाए	अपनी जवानी को	और पूरा करो	नाप	और तोल को

بِالْقِسْطِ ج	لَا نُكَلِّفُ	نَفْسًا	اِلَّا	وُسْعَهَا ج	وَاِذَا	قُلْتُمْ
साथ इंसाफ़ के	नहीं हम तकलीफ़ देते	किसी नफ़्स को	मगर	उसकी वुसअत के मुताबिक़	और जब	बात करो तुम

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاعْدِلُوْا	وَلَوْ	كَانَ	ذَا قُرْبٰى ۚ	وَبِعَهْدِ	اللّٰهِ	اَوْفُوْا ؕ	ذٰلِكُمْ
तो अदल करो	और अगरचे	हो वो	क़रीबी रिश्तेदार	और अहद को	अल्लाह के	पूरा करो	ये वो है

وَصّٰىكُمْ	بِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ ۙ (152)	وَاَنَّ	هٰذَا	صِرَاطِيْ
उसने ताकीद की है तुम्हें	जिसकी	ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	और बेशक	ये	रास्ता है मेरा

مُسْتَقِيْمًا	فَاتَّبِعُوْهُ ۚ	وَلَا	تَتَّبِعُوا	السُّبُلَ	فَتَفَرَّقَ	بِكُمْ
सीधा	पस पैरवी करो उसकी	और ना	तुम पैरवी करो	रास्तों की	पस वो जुदा करदेंगे	तुम्हें

عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ	ذٰلِكُمْ	وَصّٰىكُمْ	بِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَتَّقُوْنَ (153)
उसके रास्ते से	ये है	उसने ताकीद की है तुम्हें	जिसकी	ताकि तुम	तुम तक़वा इख़्तियार करो

ثُمَّ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْكِتٰبَ	تَمَامًا	عَلَى الَّذِيْٓ	اَحْسَنَ
फिर	दी हमने	मूसा को	किताब	पूरी करने के लिए (नेअमत)	उस पर जिसने	नेकी की

وَتَفْصِيْلًا	لِّكُلِّ	شَيْءٍ	وَّهُدًى	وَّرَحْمَةً	لَّعَلَّهُمْ	بِلِقَآءِ
और खोल कर बयान करने के लिए	हर	चीज़ को	और हिदायत	और रहमत है	ताकि वो	मुलाक़ात पर

رَبِّهِمْ	يُؤْمِنُوْنَ (154) ع	وَهٰذَا	كِتٰبٌ	اَنْزَلْنٰهُ	مُبٰرَكٌ	فَاتَّبِعُوْهُ
अपने रब की	वो ईमान लाएँ	और ये	किताब	नाज़िल किया हमने इसे	बाबरकत है	पस पैरवी करो इसकी

ع 19 4 6

وَاتَّقُوْا	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ۙ (155)	اَنْ	تَقُوْلُوْٓا	اِنَّمَآ	اُنْزِلَ
पस तक़वा इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	ताकि	(ना) तुम कहो	बेशक	नाज़िल की गई

الْكِتٰبُ	عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ	مِنْ قَبْلِنَا ص	وَاِنْ	كُنَّا	عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
किताब	ऊपर दो गिरोहों के	हमसे पहले	और बेशक	थे हम	पढ़ने पढ़ाने से उनके

لَغٰفِلِيْنَ ۙ (156)	اَوْ	تَقُوْلُوْا	لَوْ	اَنَّآ	اُنْزِلَ	عَلَيْنَا	الْكِتٰبُ
अलबत्ता ग़ाफ़िल	या	तुम कहो	अगर	बेशक हम	नाज़िल की जाती	हम पर	किताब

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَكُنَّآ	اَهْدٰى	مِنْهُمْ ج	فَقَدْ	جَآءَكُمْ	بَيِّنَةٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
अलबत्ता होते हम	ज़्यादा हिदायत याफ़्ता	उनसे	पस तहक़ीक़	आगई तुम्हारे पास	खुली दलील	तुम्हारे रब की तरफ़ से

وَهُدًى	وَّرَحْمَةٌ ج	فَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ	كَذَّبَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
और हिदायत	और रहमत	तो कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	झुठलाए	अल्लाह की आयात को

وَصَدَفَ	عَنْهَا ط	سَنَجْزِى	الَّذِيْنَ	يَصْدِفُوْنَ	عَنْ اٰيٰتِنَا
और वो ऐराज़ करे	उनसे	अनक़रीब हम बदला देंगे	उनको जो	ऐराज़ करते हैं	हमारी आयात से

سُوْٓءَ	الْعَذَابِ	بِمَا	كَانُوْا	يَصْدِفُوْنَ (157)	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ	اِلَّآ
बुरे	अज़ाब का	बवजह उसके जो	थे वो	वो ऐराज़ करते	नहीं	वो इंतिज़ार करते	मगर

اَنْ	تَاْتِيَهُمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	اَوْ	يَاْتِيَ	رَبُّكَ	اَوْ	يَاْتِيَ	بَعْضُ
ये कि	आऐं उनके पास	फ़रिश्ते	या	आ जाए	रब आपका	या	आ जाऐं	बाज़

اٰيٰتِ	رَبِّكَ ط	يَوْمَ	يَاْتِيْ	بَعْضُ	اٰيٰتِ	رَبِّكَ	لَا يَنْفَعُ
आयात/निशानियां	आपके रब की	जिस दिन	आ गईं	बाज़	आयात/निशानियां	आपके रब की	ना नफ़ा देगा

نَفْسًا	اِيْمَانُهَا	لَمْ	تَكُنْ	اٰمَنَتْ	مِنْ قَبْلُ	اَوْ	كَسَبَتْ
किसी नफ़्स को	ईमान उसका	(कि) नहीं	था वो	ईमान लाया	उससे पहले	या	(नहीं) कमाई थी उसने

فِيْٓ اِيْمَانِهَا	خَيْرًا ط	قُلِ	انْتَظِرُوْٓا	اِنَّا	مُنْتَظِرُوْنَ (158)	اِنَّ
अपने ईमान में	कोई भलाई/नेकी	कह दीजिए	इंतिज़ार करो	बेशक हम भी	इंतिज़ार करने वाले हैं	बेशक

الَّذِيْنَ	فَرَّقُوْا	دِيْنَهُمْ	وَكَانُوْا	شِيَعًا	لَّسْتَ	مِنْهُمْ
वो जिन्होंने	फ़िरक़ा-फ़िरक़ा कर दिया	अपने दीन को	और हो गए वो	गिरोह-गिरोह	नहीं आप	उनसे

فِيْ شَيْءٍ ط	اِنَّمَآ	اَمْرُهُمْ	اِلَى اللّٰهِ	ثُمَّ	يُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	كَانُوْا
किसी चीज़ में	बेशक	मामला उनका	तरफ़ अल्लाह के है	फिर	वो बता देगा उन्हें	वो जो	थे वो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَفْعَلُوْنَ (159)	مَنْ	جَآءَ	بِالْحَسَنَةِ	فَلَهٗ	عَشْرُ	اَمْثَالِهَا ج
वो करते	जो कोई	लाया	नेकी को	तो उसके लिए	दस हैं	मिसल उसके

وَمَنْ	جَآءَ	بِالسَّيِّئَةِ	فَلَا	يُجْزٰٓى	اِلَّا	مِثْلَهَا	وَهُمْ
और जो कोई	लाया	बुराई को	तो ना	वो बदला दिया जाएगा	मगर	मानिंद उसीके	और वो

لَا يُظْلَمُوْنَ (160)	قُلْ	اِنَّنِىْ	هَدٰىنِىْ	رَبِّىْٓ	اِلٰى صِرَاطٍ
ना वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	कह दीजिए	बेशक मैं	हिदायत दी मुझे	मेरे रब ने	तरफ रास्ते

مُّسْتَقِيْمٍ ج	دِيْنًا	قِيَمًا	مِّلَّةَ	اِبْرٰهِيْمَ	حَنِيْفًا ج	وَمَا	كَانَ
सीधे के	दीन	दुरुस्त की	जो मिल्लत है	इब्राहीम की	जो यकसू था	और ना	था वो

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (161)	قُلْ	اِنَّ	صَلَاتِىْ	وَنُسُكِىْ	وَمَحْيَاىَ
मुशरिकीन में से	कह दीजिए	बेशक	मेरी नमाज़	मेरी क़ुर्बानी	और मेरा जीना

وَمَمَاتِىْ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (162) لا	لَا شَرِيْكَ	لَهٗ ج	وَبِذٰلِكَ
और मेरा मरना	अल्लाह ही के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का	नहीं कोई शरीक	उसका	और इसी का

اُمِرْتُ	وَاَنَا	اَوَّلُ	الْمُسْلِمِيْنَ (163)	قُلْ	اَغَيْرَ	اللّٰهِ	اَبْغِىْ
हुक्म दिया गया हूं मैं	और मैं	सबसे पहला हूं	मुसलमानों में	कह दीजिए	क्या सिवाए	अल्लाह के	मैं तलाश करूं

رَبًّا	وَّهُوَ	رَبُّ	كُلِّ	شَىْءٍ ط	وَلَا	تَكْسِبُ	كُلُّ نَفْسٍ
कोई रब	हालांकि वो	रब है	हर	चीज़ का	और नहीं	कमाता	कोई नफ़्स

اِلَّا	عَلَيْهَا ج	وَلَا	تَزِرُ	وَازِرَةٌ	وِّزْرَ	اُخْرٰى ج	ثُمَّ
मगर	हालांकि वो	और नहीं	बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	दूसरी का	फिर

اِلٰى رَبِّكُمْ	مَّرْجِعُكُمْ	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ
तरफ़ अपने रब के	लौटना है तुम्हारा	फिर वो बताएगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	जिसमें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿164﴾	وَهُوَ	الَّذِيْ	جَعَلَكُمْ	خَلٰٓئِفَ	الْاَرْضِ	وَرَفَعَ
तुम इख़्तिलाफ़ करते	और वो ही है	जिसने	बनाया तुम्हें	जानशीन	ज़मीन का	और बुलंद किया

بَعْضَكُمْ	فَوْقَ	بَعْضٍ	دَرَجٰتٍ	لِّيَبْلُوَكُمْ	فِيْ مَآ	اٰتٰىكُمْ ؕ
तुम्हारे बाज़ को	ऊपर	बाज़ के	दरजात में	ताकि वो आज़माए	उसमें जो	उसने दिया तुम्हें

ع 20 11 7 النصف

اِنَّ	رَبَّكَ	سَرِيْعُ	الْعِقَابِ ۖ	وَاِنَّهٗ	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿165﴾ ع
बेशक	रब आपका	जल्द देने वाला है	सज़ा	और बेशक वो	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	बहुत रहम करने वाला है

7 سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ 39

اٰيَاتُهَا : 206 — رُكُوْعَاتُهَا : 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓصٓ ﴿1﴾ ج	كِتٰبٌ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	فَلَا	يَكُنْ	فِيْ صَدْرِكَ
الٓمّٓصٓ	ये किताब	नाज़िल की गई है	तरफ़ आपके	पस ना	हो	आपके सीने में

حَرَجٌ	مِّنْهُ	لِتُنْذِرَ	بِهٖ	وَذِكْرٰى	لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾	اِتَّبِعُوْا	مَآ
कोई तंगी	इससे	ताकि आप डराऐं	साथ इसके	और नसीहत है	ईमान लाने वालों के लिए	पैरवी करो	उसकी जो

اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَلَا	تَتَّبِعُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ	اَوْلِيَآءَ ؕ
नाज़िल किया गया	तरफ़ तुम्हारे	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और ना	तुम पैरवी करो	उसके सिवा	(और) सरपरस्तों की

قَلِيْلًا مَّا	تَذَكَّرُوْنَ ﴿3﴾	وَكَمْ	مِّنْ قَرْيَةٍ	اَهْلَكْنٰهَا	فَجَآءَهَا
कितना कम	तुम नसीहत पकड़ते हो	और कितनी ही	बस्तियां	हलाक कर दिया हमने उन्हें	पस आया उनके पास

بَاْسُنَا	بَيَاتًا	اَوْ	هُمْ	قَآئِلُوْنَ ﴿4﴾	فَمَا	كَانَ	دَعْوٰىهُمْ	اِذْ
अज़ाब हमारा	रात के वक़्त	या	वो	क़ैलूला कर रहे थे	तोना	थी	पुकार उनकी	जब

جَآءَهُمْ	بَاْسُنَآ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْٓا	اِنَّا	كُنَّا	ظٰلِمِيْنَ ﴿5﴾
आया उनके पास	अज़ाब हमारा	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	बेशक हम	थे हम ही	ज़ालिम

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَلَنَسْـَٔلَنَّ	الَّذِيْنَ	اُرْسِلَ	اِلَيْهِمْ	وَلَنَسْـَٔلَنَّ
पस अलबत्ता हम ज़रूर सवाल करेंगे	उन लोगों से	भेजे गए (रसूल)	तरफ़ जिनके	और अलबत्ता हम ज़रूर सवाल करेंगे

الْمُرْسَلِيْنَ ⑥ لا	فَلَنَقُصَّنَّ	عَلَيْهِمْ	بِعِلْمٍ	وَّمَا	كُنَّا	غَآئِبِيْنَ ⑦
रसूलों से	पस हम अलबत्ता ज़रूर बयान करेंगे	उन पर	साथ इल्म के	और नहीं	थे हम	ग़ायब

وَالْوَزْنُ	يَوْمَئِذِ	الْحَقُّ ج	فَمَنْ	ثَقُلَتْ	مَوَازِيْنُهٗ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ
और वज़न	उस दिन	हक़ होगा	तो जो कोई	भारी हुए	मीज़ान/तराज़ू उसके	तो यही लोग हैं	वो

الْمُفْلِحُوْنَ ⑧	وَمَنْ	خَفَّتْ	مَوَازِيْنُهٗ	فَاُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
जो फ़लाह पाने वाले हैं	और जो कोई	हल्के हुए	मीज़ान/तराज़ू उसके	तो यही लोग हैं	वो जिन्होंन

خَسِرُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	بِمَا	كَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	يَظْلِمُوْنَ ⑨	وَلَقَدْ
ख़सारे में डाला	अपने नफ़्सों को	बवजह उसके जो	थे वो	साथ हमारी आयात के	वो ज़ुल्म करते	और अलबत्ता तहक़ीक़

مَكَّنّٰكُمْ	فِي الْاَرْضِ	وَجَعَلْنَا	لَكُمْ	فِيْهَا	مَعَايِشَ ط	قَلِيْلًا مَّا
ठिकाना दिया हमने तुम्हें	ज़मीन में	और बनाए हमने	तुम्हारे लिए	उसमें	ज़िंदगी के सामान	कितना कम

تَشْكُرُوْنَ ⑩ ع	وَلَقَدْ	خَلَقْنٰكُمْ	ثُمَّ	صَوَّرْنٰكُمْ	ثُمَّ	قُلْنَا
तुम शुक्र करते हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने तुम्हें	फिर	सूरत बनाई हमने तुम्हारी	फिर	कहा हमने

ع 1 10 8

لِلْمَلٰٓئِكَةِ	اسْجُدُوْا	لِاٰدَمَ قف	فَسَجَدُوْٓا	اِلَّآ	اِبْلِيْسَ ط	لَمْ	يَكُنْ
फ़रिश्तों को	सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाए	इब्लीस के	ना	था वो

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ⑪	قَالَ	مَا	مَنَعَكَ	اَلَّا	تَسْجُدَ	اِذْ	اَمَرْتُكَ ط
सज्दा करने वालों में से	फ़रमाया	किसने	मना किया तुझे	कि ना	तू सज्दा करे	जबकि	हुक्म दिया था मेंने तुझे

قَالَ	اَنَا	خَيْرٌ	مِّنْهُ ج	خَلَقْتَنِيْ	مِنْ نَّارٍ	وَّخَلَقْتَهٗ
वो बोला	मैं	बेहतर हूं	उससे	पैदा किया तूने मुझे	आग से	और पैदा किया तूने उसे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ طِيْنٍ ⑫	قَالَ	فَاهْبِطْ	مِنْهَا	فَمَا	يَكُوْنُ	لَكَ	اَنْ
मिट्टी से	फ़रमाया	पस उतर जा	उससे	पस नहीं	है	तेरे लिए	कि

تَتَكَبَّرَ	فِيْهَا	فَاخْرُجْ	اِنَّكَ	مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ⑬	قَالَ	اَنْظِرْنِيْٓ
तू तकब्बुर करे	उसमें	पस निकल जा	बेशक तू	ज़लील होने वालों में से है	उसने कहा	मोहलत दे मुझे

اِلٰى يَوْمِ	يُبْعَثُوْنَ ⑭	قَالَ	اِنَّكَ	مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ⑮	قَالَ
उस दिन तक	(जब) वो उठाए जाऐंगे	फ़रमाया	बेशक तू	मोहलत दिए जाने वालों में से है	उसने कहा

فَبِمَآ	اَغْوَيْتَنِيْ	لَاَقْعُدَنَّ	لَهُمْ	صِرَاطَكَ	الْمُسْتَقِيْمَ ⑯ لا	ثُمَّ
पस बवजह उसके जो	गुमराह किया तून मूझे	अलबत्ता मैं ज़रूर बैठुंगा	उनके लिए	तेरे रास्ते	सीधे पर	फिर

لَاٰتِيَنَّهُمْ	مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ	وَمِنْ خَلْفِهِمْ	وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ
अलबत्ता मैं ज़रूर आऊंगा उनके पास	उनके सामने से	और उनके पीछे से	और उनके दाऐं से

وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ط	وَلَا	تَجِدُ	اَكْثَرَهُمْ	شٰكِرِيْنَ ⑰	قَالَ	اخْرُجْ
और उनके बाऐं से	और ना	तू पाएगा	उनकी अक्सरियत को	शुक्रगुज़ार	फ़रमाया	निकल जा

مِنْهَا	مَذْءُوْمًا	مَّدْحُوْرًا ط	لَمَنْ	تَبِعَكَ	مِنْهُمْ	لَاَمْلَئَنَّ
उससे	मज़म्मत किया हुआ	रहमत से दूर किया हुआ	अलबत्ता जो	पैरवी करेगा तेरी	उनमें से	अलबत्ता मैं ज़रूर भरदुंगा

جَهَنَّمَ	مِنْكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ⑱	وَيٰٓاٰدَمُ	اسْكُنْ	اَنْتَ	وَزَوْجُكَ	الْجَنَّةَ
जहन्नम को	तुमसे	सबके-सबसे	और ऐ आदम	रहो	तुम	और बीवी तुम्हारी	जन्नत में

فَكُلَا	مِنْ حَيْثُ	شِئْتُمَا	وَلَا	تَقْرَبَا	هٰذِهِ الشَّجَرَةَ	فَتَكُوْنَا
पस दोनों खाओ	जहाँ से	तुम दोनों चाहो	और ना	तुम दोनों क़रीब जाना	उस दरख़्त के	वरना तुम दोनों हो जाओगे

مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ⑲	فَوَسْوَسَ	لَهُمَا	الشَّيْطٰنُ	لِيُبْدِيَ	لَهُمَا
ज़ालिमों में से	पस वसवसा डाला	उन दोनों के लिए	शैतान ने	ताकि वो ज़ाहिर करदे	उन दोनों के लिए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا وُرِيَ	عَنْهُمَا	مِنْ سَوْاٰتِهِمَا	وَقَالَ	مَا	نَهٰكُمَا
जो छुपाइ गईं थीं	उन दोनों से	शर्मगाहें उन दोनों की	और कहा	नहीं	रोका तुम दोनों को

رَبُّكُمَا	عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ	اِلَّآ	اَنْ	تَكُوْنَا	مَلَكَيْنِ	اَوْ
तुम्हारे रब ने	इस दरख़्त से	मगर	ये कि	तुम दोनों हो जाओ	दो फ़रिश्ते	या

تَكُوْنَا	مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿20﴾	وَقَاسَمَهُمَآ	اِنِّيْ	لَكُمَا
तुम दोनों हो जाओ	हमेशा रहने वालों में से	और उसने क़सम खाई उन दोनों से	बेशक मैं	तुम दोनों के लिए

لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿21﴾	فَدَلّٰىهُمَا	بِغُرُوْرٍ ۚ	فَلَمَّا	ذَاقَا	الشَّجَرَةَ
अलबत्ता ख़ैरख़्वाहों में से हूं	पस उसने खींच लिया उन दोनों को	साथ धोखे के	फिर जब	दोनों ने चखा	उस दरख़्त को

بَدَتْ	لَهُمَا	سَوْاٰتُهُمَا	وَطَفِقَا	يَخْصِفٰنِ	عَلَيْهِمَا
ज़हिर हो गईं	उन दोनों के लिए	शर्मगाहें उन दोनों की	और वो दोनों शुरू होगए	वो दोनों चिपकाने लगे	अपने ऊपर

مِنْ وَّرَقِ	الْجَنَّةِ ؕ	وَنَادٰىهُمَا	رَبُّهُمَآ	اَلَمْ	اَنْهَكُمَا
पत्तों से	जन्नत के	और पुकारा उन दोनों को	उनके रब ने	क्या नहीं	मैंने रोका था तुम दोनों को

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ	وَاَقُلْ	لَّكُمَآ	اِنَّ	الشَّيْطٰنَ	لَكُمَا	عَدُوٌّ
उस दरख़्त से	और मैंने कहा था	तुम दोनों को	बेशक	शैतान	तुम दोनों का	दुश्मन है

مُّبِيْنٌ ﴿22﴾	قَالَا	رَبَّنَا	ظَلَمْنَآ	اَنْفُسَنَا سكتة	وَاِنْ	لَّمْ
खुल्लम-खुल्ला	उन दोनों ने कहा	ऐ हमारे रब	ज़ुल्म किया हमने	अपनी जानों पर	और अगर	ना

تَغْفِرْ لَنَا	وَتَرْحَمْنَا	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾	قَالَ	اهْبِطُوْا
तूने बख़्शा हमें	और (ना) तूने रहम किया हम पर	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे	ख़सारा पाने वालों में से	फ़रमाया	उतर जाओ

بَعْضُكُمْ	لِبَعْضٍ	عَدُوٌّ ۚ	وَلَكُمْ	فِي الْاَرْضِ	مُسْتَقَرٌّ	وَّمَتَاعٌ
बाज़ तुम्हारे	बाज़ के	दुश्मन हैं	और तुम्हारे लिए	ज़मीन में	एक जाय क़रारहै	और कुछ फ़ायदा उठाना है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلٰى حِيْنٍ ﴿24﴾	قَالَ	فِيْهَا	تَحْيَوْنَ	وَفِيْهَا	تَمُوْتُوْنَ	وَمِنْهَا
एक वक़्त तक	फ़रमाया	उसी में	तुम जियोगे	और उसी में	तुम मरोगे	और उसी से

ع 2 15 9

تُخْرَجُوْنَ ﴿25﴾ ع	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ	قَدْ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكُمْ	لِبَاسًا	يُّوَارِيْ
तुम निकाले जाओगे	ऐ बनी आदम	तहक़ीक़	उतारा हमने	तुम पर	लिबास	जो छुपाता है

سَوْاٰتِكُمْ	وَرِيْشًا ؕ	وَلِبَاسُ	التَّقْوٰى ۙ	ذٰلِكَ	خَيْرٌ ؕ	ذٰلِكَ
शर्मगाहें तुम्हारी	और ज़ीनत (भी) है	और लिबास	तक़वा का	ये	बेहतर है	ये

مِنْ اٰيٰتِ	اللّٰهِ	لَعَلَّهُمْ	يَذَّكَّرُوْنَ ﴿26﴾	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ	لَا يَفْتِنَنَّكُمُ
निशानियों में से है	अल्लाह की	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	ऐ बनी आदम	हरगिज़ ना फ़ितने में डाले तुम्हें

الشَّيْطٰنُ	كَمَآ	اَخْرَجَ	اَبَوَيْكُمْ	مِّنَ الْجَنَّةِ	يَنْزِعُ	عَنْهُمَا
शैतान	जैसा कि	उसने निकलवा दिया	तुम्हारे वालिदैन को	जन्नत से	उसने उतरवा दिया	उन दोनों से

لِبَاسَهُمَا	لِيُرِيَهُمَا	سَوْاٰتِهِمَا ؕ	اِنَّهٗ	يَرٰىكُمْ	هُوَ	وَقَبِيْلُهٗ
लिबास उन दोनों का	ताकि वो दिखाए उन्हें	शर्मगाहें उन दोनों की	बेशक वो	वो देखता है तुम्हें	वो	और क़बीला उसका

مِنْ حَيْثُ	لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ	اِنَّا	جَعَلْنَا	الشَّيٰطِيْنَ	اَوْلِيَآءَ	لِلَّذِيْنَ
जहां से	नहीं तुम देखते उन्हें	बेशक हम	बनाया हमने	शैतानों को	दोस्त	उनका जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿27﴾	وَاِذَا	فَعَلُوْا	فَاحِشَةً	قَالُوْا	وَجَدْنَا	عَلَيْهَآ
नहीं वो ईमान लाते	और जब	वो करते हैं	कोई बेहयाई	वो कहते हैं	पाया हमने	उस पर

اٰبَآءَنَا	وَاللّٰهُ	اَمَرَنَا	بِهَا ؕ	قُلْ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَاْمُرُ
आबा ओ अजदाद को	और अल्लाह ने	हुक्म दिया है हमें	उसका	कह दीजीए	बेशक	अल्लाह	नहीं वो हुक्म देता

بِالْفَحْشَآءِ ؕ	اَتَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿28﴾	قُلْ	اَمَرَ
बेहयाई का	क्या तुम कहते हो	अल्लाह पर	वो जो	नहीं तुम जानते	कह दीजिए	हुक्म दिया है

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبِّيْ	بِالْقِسْطِ قف	وَاَقِيْمُوْا	وُجُوْهَكُمْ	عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ	وَّادْعُوْهُ
मेरे रब ने	इंसाफ़ का	और सीधे करो	अपने चेहरे	हर नमाज़ के वक़्त	और पुकारो उसे

مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ ؕ	كَمَا	بَدَاَكُمْ	تَعُوْدُوْنَ ؕ (29)	فَرِيْقًا
ख़ालिस करते हुए	उसके लिए	दीन को	जैसा कि	उसने इब्तिदा की थी तुम्हारी	(वैसे ही) तुम लौटोगे	एक गिरोह को

هَدٰى	وَفَرِيْقًا	حَقَّ	عَلَيْهِمُ	الضَّلٰلَةُ ؕ	اِنَّهُمُ	اتَّخَذُوا
उसने हिदायत दी	और एक गिरोह	चसपां हो गई	उन पर	गुमराही	बेशक वो	उन्होंने बना लिया

الشَّيٰطِيْنَ	اَوْلِيَآءَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَيَحْسَبُوْنَ	اَنَّهُمْ	مُّهْتَدُوْنَ (30)
शयातीन को	दोस्त	सिवाए	अल्लाह के	और वो समझते हैं	बेशक वो	हिदायत याफ़्ता हैं

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ	خُذُوْا	زِيْنَتَكُمْ	عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ	وَّكُلُوْا	وَاشْرَبُوْا	وَلَا
ऐ बनी आदम	इख़्तियार करो	ज़ीनत अपनी	हर नमाज़ के वक़्त	और खाओ	और पियो	और ना

تُسْرِفُوْا ج	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْمُسْرِفِيْنَ (31) ع	قُلْ	مَنْ	حَرَّمَ	زِيْنَةَ	ع 3 6 10
तुम इसराफ़ करो	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	इसराफ़ करने वालों को	कह दीजिए	किसने	हराम की	ज़ीनत	

اللّٰهِ	الَّتِيْٓ	اَخْرَجَ	لِعِبَادِهٖ	وَالطَّيِّبٰتِ	مِنَ الرِّزْقِ ؕ	قُلْ
अल्लाह की	वो जो	उसने निकाली	अपने बंदों के लिए	और पाकीज़ा चीज़ें	रिज़्क़ में से	कह दीजिए

هِيَ	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا	خَالِصَةً	يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
ये हैं	उनके लिए जो	ईमान लाए	दुनिया की ज़िंदगी में	ख़ालिसतन (होंगी)	क़यामत के दिन

كَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ (32)	قُلْ	اِنَّمَا	حَرَّمَ
इसी तरह	हम खोलकर बयान करते हैं	आयात	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं	कह दीजिए	बेशक	हराम किया

رَبِّيَ	الْفَوَاحِشَ	مَا	ظَهَرَ	مِنْهَا	وَمَا	بَطَنَ	وَالْاِثْمَ
मेरे रब ने	बेहयाई के कामों को	जो	ज़ाहिरी हों	उनमें से	और जो	पोशीदा हों	और गुनाह को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْبَغْيَ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	وَاَنْ	تُشْرِكُوْا	بِاللّٰهِ	مَا	لَمْ
और सरकशी को	बग़ैर	हक़ के	और ये कि	तुम शरीक ठहराओ	साथ अल्लाह के	जो	नहीं

يُنَزِّلْ	بِهٖ	سُلْطٰنًا	وَّاَنْ	تَقُوْلُوْا	عَلَى اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ (33)
उसने उतारी	उसकी	कोई दलील	और ये कि	तुम कहो	अल्लाह पर	जो	नहीं तुम जानते

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ	اَجَلٌ ج	فَاِذَا	جَآءَ	اَجَلُهُمْ	لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ	سَاعَةً
और हर उम्मत के लिए	एक मुक़र्रर वक़्त है	फिर जब	आजाता है	मुक़र्रर वक़्त उनका	नहीं वो पीछे हो सकते	एक घड़ी

وَّلَا	يَسْتَقْدِمُوْنَ (34)	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ	اِمَّا	يَاْتِيَنَّكُمْ	رُسُلٌ	مِّنْكُمْ
और ना	वो आगे बढ़ सकते हैं	ऐ बनी आदम	अगर	आजाऐं तुम्हारे पास	रसूल	तुम में से

يَقُصُّوْنَ	عَلَيْكُمْ	اٰيٰتِيْ لا	فَمَنِ	اتَّقٰى	وَاَصْلَحَ	فَلَا	خَوْفٌ
जो बयान करते हों	तुम पर	मेरी आयात	तो जो	तक़वा करे	और इस्लाह कर ले	तो ना	कोई ख़ौफ़ होगा

عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ (35)	وَالَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَاسْتَكْبَرُوْا
उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	और वो जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	और तकब्बुर किया

عَنْهَآ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ج	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ (36)	فَمَنْ
उनसे	यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	तो कौन

اَظْلَمُ	مِمَّنِ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	اَوْ	كَذَّبَ	بِاٰيٰتِهٖ ط
बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	गढ़ ले	अल्लाह पर	झूठ	या	वो झुठलाए	उसकी आयात को

اُولٰٓئِكَ	يَنَالُهُمْ	نَصِيْبُهُمْ	مِّنَ الْكِتٰبِ ط	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءَتْهُمْ
यही लोग हैं	पहुंचेगा उन्हें	हिस्सा उनका	लिखे हुए में से	यहां तक कि	जब	आ जाऐंगे उनके पास

رُسُلُنَا	يَتَوَفَّوْنَهُمْ لا	قَالُوْٓا	اَيْنَ	مَا	كُنْتُمْ	تَدْعُوْنَ
भेजे हुए हमारे	वो फ़ौत करेंगे उन्हें	वो कहेंगे	कहां हैं	जिन्हें	थे तुम	तुम पुकारते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	قَالُوْا	ضَلُّوْا	عَنَّا	وَشَهِدُوْا	عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
सिवाए	अल्लाह के	वो कहेंगे	गुम हो गए	हमसे	और वो गवाही देंगे	अपने नफ़्सों पर

اَنَّهُمْ	كَانُوْا	كٰفِرِيْنَ (37)	قَالَ	ادْخُلُوْا	فِيْٓ اُمَمٍ	قَدْ	خَلَتْ
कि बेशक वो	थे वो	काफ़िर	वो फ़रमाएगा	दाख़िल होजाओ	जमाअतों में	तहक़ीक़	जो गुज़र चुकी हैं

مِنْ قَبْلِكُمْ	مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ	فِي النَّارِ ؕ	كُلَّمَا	دَخَلَتْ	اُمَّةٌ
तुम से पहले	जिन्न व इंस में से	आग में	जब कभी	दाख़िल होगी	कोई जमाअत

لَّعَنَتْ	اُخْتَهَا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	ادَّارَكُوْا	فِيْهَا	جَمِيْعًا ۙ	قَالَتْ
लानत करेगी	अपनी बहन को	यहां तक कि	जब	वो जमा हो जाऐंगे	उसमें	सब के सब	कहेगी

اُخْرٰىهُمْ	لِاُوْلٰىهُمْ	رَبَّنَا	هٰٓؤُلَآءِ	اَضَلُّوْنَا	فَاٰتِهِمْ	عَذَابًا
पिछली उनकी	अपनी पहली को	ऐ रब हमारे	ये हैं वो लोग	जिन्होंने गुमराह किया हमें	पस दे इन्हें	अज़ाब

ضِعْفًا	مِّنَ النَّارِ ؕ	قَالَ	لِكُلٍّ	ضِعْفٌ	وَّلٰكِنْ	لَّا تَعْلَمُوْنَ (38)
दोगुना	आग से	वो फ़रमाएगा	हर एक के लिए	दोगुना है	और लेकिन	नहीं तुम जानते

وَقَالَتْ	اُوْلٰىهُمْ	لِاُخْرٰىهُمْ	فَمَا	كَانَ	لَكُمْ	عَلَيْنَا	مِنْ فَضْلٍ
और कहेगी	पहली उनकी	उनकी पिछली को	पस ना	हुई	तुम्हारे लिए	हम पर	कोई फ़ज़ीलत

فَذُوْقُوا	الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْسِبُوْنَ (39) ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	ع 4 8 11
पस चखो	अज़ाब	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कमाई करते	बेशक	वो जिन्होंने	झुठलाया	

بِاٰيٰتِنَا	وَاسْتَكْبَرُوْا	عَنْهَا	لَا تُفَتَّحُ	لَهُمْ	اَبْوَابُ	السَّمَآءِ
हमारी आयात को	और उन्होंने तकब्बुर किया	उनसे	नहीं खोले जाऐंगे	उनके लिए	दरवाज़े	आसमान के

وَلَا	يَدْخُلُوْنَ	الْجَنَّةَ	حَتّٰى	يَلِجَ	الْجَمَلُ	فِيْ سَمِّ	الْخِيَاطِ ؕ
और ना	वो दाख़िल होंगे	जन्नत में	यहां तक कि	दाख़िल होजाए	ऊंट	नाके में	सूई के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَكَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْمُجْرِمِيْنَ (40)	لَهُمْ	مِّنْ جَهَنَّمَ	مِهَادٌ
और इसी तरह	हम बदला देंगे	मुजरिमों को	उनके लिए	जहन्नम से	बिछोना है

وَّمِنْ فَوْقِهِمْ	غَوَاشٍ ؕ	وَكَذٰلِكَ	نَجْزِى	الظّٰلِمِيْنَ (41)	وَالَّذِيْنَ
और उनके ऊपर से	ओढ़ना है	और इसी तरह	हम बदला देंगे	ज़ालिमों को	और वो जो

اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَا نُكَلِّفُ	نَفْسًا	اِلَّا	وُسْعَهَآ ۫
ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	नहीं हम तकलीफ़ देते	किसी जान को	मगर	उसकी वुसअत के मुताबिक़

اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	الْجَنَّةِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ (42)	وَنَزَعْنَا
यही लोग हैं	साथी	जन्नत के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और निकाल लेंगे हम

مَا	فِىْ صُدُوْرِهِمْ	مِّنْ غِلٍّ	تَجْرِىْ	مِنْ تَحْتِهِمُ	الْاَنْهٰرُ ۚ	وَقَالُوا
जो	उनके सीनों में होगा	कोई कीना	बहती होंगी	उनके नीचे से	नहरें	और वो कहेंगे

الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِىْ	هَدٰىنَا	لِهٰذَا قف	وَمَا	كُنَّا	لِنَهْتَدِىَ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जिसने	रहनुमाई की हमारी	इसके लिए	और ना	थे हम	कि हम हिदायत पाते

لَوْ	لَآ	اَنْ	هَدٰىنَا	اللّٰهُ ۚ	لَقَدْ	جَآءَتْ	رُسُلُ	رَبِّنَا
अगर	ना (होता)	ये कि	हिदायत देता हमें	अल्लाह	अलबत्ता तहक़ीक़	आ गए	रसूल	हमारे रब के

بِالْحَقِّ ؕ	وَنُوْدُوْٓا	اَنْ	تِلْكُمُ	الْجَنَّةُ	اُوْرِثْتُمُوْهَا	بِمَا
साथ हक़ के	और वो पुकारे जाऐंगे	कि	ये	जन्नत है	वारिस बनाए गए हो तुम इसके	बवजह उसके जो

كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ (43)	وَنَادٰٓى	اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ	اَصْحٰبَ النَّارِ	اَنْ
थे तुम	तुम अमल करते	और पुकारेंगे	जन्नत वाले	आग वालों को	कि

قَدْ	وَجَدْنَا	مَا	وَعَدَنَا	رَبُّنَا	حَقًّا	فَهَلْ	وَجَدْتُّمْ
तहक़ीक़	पा लिया हमने	जो	वादा किया था हमसे	हमारे रब ने	सच्चा	तो क्या	पा लिया तुमने

الثلثة

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّا	وَعَدَ	رَبُّكُمْ	حَقًّا ؕ	قَالُوْا	نَعَمْ ۚ	فَاَذَّنَ	مُؤَذِّنٌۢ
जो	वादा किया था	तुम्हारे रब ने	सच्चा	वो कहेंगे	हाँ	तो पुकारेगा	एक पुकारने वाला

بَيْنَهُمْ	اَنْ	لَّعْنَةُ	اللّٰهِ	عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿44﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَصُدُّوْنَ
उनके दर्मियान	कि	लानत हो	अल्लाह की	ज़ालिमों पर	वो जो	रोकते थे

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَيَبْغُوْنَهَا	عِوَجًا ۚ	وَهُمْ	بِالْاٰخِرَةِ	كٰفِرُوْنَ ﴿45﴾
अल्लाह के रास्ते से	और वो तलाश करते थे उसमें	टेढ़ापन	और वो	आख़िरत का	इंकार करने वाले थे

وقف لازم باختلاف

وَبَيْنَهُمَا	حِجَابٌ ۚ	وَعَلَى الْاَعْرَافِ	رِجَالٌ	يَّعْرِفُوْنَ	كُلًّا ۢ
और दर्मियान उन दोनों के	एक हिजाब होगा	और आराफ़ पर	कुछ लोग होंगे	वो पहचानते होंगे	हर एक को

بِسِيْمٰهُمْ ۚ	وَنَادَوْا	اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ	اَنْ	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمْ قف	لَمْ
उनकी अलामात से	और वो पुकारेंगे	जन्नत वालों को	कि	सलाम हो	तुम पर	नहीं

يَدْخُلُوْهَا	وَهُمْ	يَطْمَعُوْنَ ﴿46﴾	وَاِذَا	صُرِفَتْ	اَبْصَارُهُمْ	تِلْقَآءَ
वो दाख़िल हुए होंगे उसमें	और वो	वो उम्मीद रखते होंगे	और जब	फेरी जाएंगी	निगाहें उनकी	तरफ़

اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ	قَالُوْا	رَبَّنَا	لَا تَجْعَلْنَا	مَعَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿47﴾ ع
आग वालों को	वो कहेंगे	ऐ हमारे रब	ना तू कर हमें	साथ उन लोगों के	जो ज़ालिम हैं

ع 5 8 12

وَنَادٰٓى	اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ	رِجَالًا	يَّعْرِفُوْنَهُمْ	بِسِيْمٰهُمْ	قَالُوْا
और पुकारेंगे	आराफ़ वाले	कुछ लोगों को	वो पहचानते होंगे उन्हें	उनकी अलामात से	वो कहेंगे

مَآ	اَغْنٰى	عَنْكُمْ	جَمْعُكُمْ	وَمَا	كُنْتُمْ	تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿48﴾	اَهٰٓؤُلَآءِ
ना	काम आई	तुम्हें	जमाअत तुम्हारी	और जो कुछ	थे तुम	तुम तकब्बुर करते	क्या यही लोग हैं

الَّذِيْنَ	اَقْسَمْتُمْ	لَا يَنَالُهُمُ	اللّٰهُ	بِرَحْمَةٍ ؕ	اُدْخُلُوا	الْجَنَّةَ
वो जो	क़सम खाई थी तुमने	नहीं पहुंचाएगा उन्हें	अल्लाह	कोई रहमत	दाख़िल हो जाओ	जन्नत में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا	خَوْفٌ	عَلَيْكُمْ	وَلَآ	اَنْتُمْ	تَحْزَنُوْنَ (49)	وَنَادٰٓى
ना	कोई ख़ौफ़ होगा	तुम पर	और ना	तुम	तुम ग़मगीन होगे	और पुकारेंगे

اَصْحٰبُ النَّارِ	اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ	اَنْ	اَفِيْضُوْا	عَلَيْنَا	مِنَ الْمَآءِ
आग वाले	जन्नत वालों को	कि	डालो	हम पर	कुछ पानी

اَوْ	مِمَّا	رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ ؕ	قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	حَرَّمَهُمَا
या	उससे जो	रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	वो कहेंगे	बेशक	अल्लाह ने	हराम कर दिया उन दोनों को

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ (50)	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	دِيْنَهُمْ	لَهْوًا	وَّلَعِبًا
काफ़िरों पर	वो जिन्होंने	बना लिया	अपने दीन को	शुग़ल	और खेल

وَّغَرَّتْهُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا ۚ	فَالْيَوْمَ	نَنْسٰهُمْ	كَمَا	نَسُوْا
और धोखे में डाला उनको	ज़िंदगी ने	दुनिया की	तो आज	हम भुला देंगे उन्हें	जैसा कि	उन्होंने भुला दिया

لِقَآءَ	يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ	وَمَا	كَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	يَجْحَدُوْنَ (51)	وَلَقَدْ
मुलाक़ात को	अपने इस दिन की	और जो	थे वो	हमारी आयात का	वो इंकार करते	और अलबत्ता तहक़ीक़

جِئْنٰهُمْ	بِكِتٰبٍ	فَصَّلْنٰهُ	عَلٰى عِلْمٍ	هُدًى	وَّرَحْمَةً
लाए हम उनके पास	एक किताब	खोल कर बयान किया हमने उसे	इल्म की बिना पर	हिदायत	और रहमत है

لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ (52)	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ	اِلَّا	تَاْوِيْلَهٗ ؕ	يَوْمَ
उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हैं	नहीं	वो इंतिज़ार करते	मगर	उसके अंजाम का	जिस दिन

يَاْتِيْ	تَاْوِيْلُهٗ	يَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	نَسُوْهُ	مِنْ قَبْلُ	قَدْ	جَآءَتْ
आ जाएगा	अंजाम उसका	कहेंगे	वो जो	भूल गए थे उसे	उससे पहले	तहक़ीक़	लाए थे

رُسُلُ	رَبِّنَا	بِالْحَقِّ ۚ	فَهَلْ	لَّنَا	مِنْ شُفَعَآءَ	فَيَشْفَعُوْا
रसूल	हमारे रब के	हक़	पस क्या है	हमारे लिए	कोई सिफ़ारिशी	कि वो सिफ़ारिश करे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَنَآ	اَوْ	نُرَدُّ	فَنَعْمَلَ	غَيْرَ	الَّذِىْ	كُنَّا	نَعْمَلُ ؕ	قَدْ
हमारे लिए	या	हम लौटाए जाएँ	फिर हम अमल करें	अलावा	उसके जो	थे हम	हम अमल करते	तहक़ीक़

ع 6 6 13

خَسِرُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	وَضَلَّ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ (53) ع
उन्होंने ख़सारे में डाला	अपने नफ़्सों को	और खो गए	उनसे जो	जो	थे वो	वो गढ़ते

اِنَّ	رَبَّكُمُ	اللّٰهُ	الَّذِىْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
बेशक	रब तुम्हारा	अल्लाह है	जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	छः दिनों में

ثُمَّ	اسْتَوٰى	عَلَى الْعَرْشِ قف	يُغْشِى	الَّيْلَ	النَّهَارَ	يَطْلُبُهٗ
फिर	वो बुलंद हुआ	अर्श पर	वो ढांप देता है	रात को	दिन पर	जो तलब करता है उसे

حَثِيْثًا ۙ	وَّالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	وَالنُّجُوْمَ	مُسَخَّرٰتٍۭ	بِاَمْرِهٖ ؕ	اَلَا
तेज़ी से	और सूरज	और चांद	और सितारे	जो मुसख़्ख़र किए हुए हैं	उसके हुक्म से	ख़बरदार

لَهُ	الْخَلْقُ	وَالْاَمْرُ ؕ	تَبٰرَكَ	اللّٰهُ	رَبُّ	الْعٰلَمِيْنَ (54)
उसी के लिए है	पैदा करना	और हुक्म देना	बहुत बाबर्कत है	अल्लाह	जो रब है	तमाम जहानों का

اُدْعُوْا	رَبَّكُمْ	تَضَرُّعًا	وَّخُفْيَةً ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْمُعْتَدِيْنَ (55) ج
पुकारो	अपने रब को	आजिज़ी से	और चुपके-चुपके	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	हद से तजावुज़ करने वालों को

وَلَا	تُفْسِدُوْا	فِى الْاَرْضِ	بَعْدَ اِصْلَاحِهَا	وَادْعُوْهُ	خَوْفًا	وَّطَمَعًا ؕ
और ना	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	बाद उसकी इस्लाह के	और पुकारो उसे	ख़ौफ़	और उम्मीद से

اِنَّ	رَحْمَتَ	اللّٰهِ	قَرِيْبٌ	مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ (56)	وَهُوَ	الَّذِىْ	يُرْسِلُ
बेशक	रहमत	अल्लाह की	क़रीब है	एहसान करने वालों के	और वो ही है	जो	भेजता है

الرِّيٰحَ	بُشْرًۢا	بَيْنَ يَدَىْ	رَحْمَتِهٖ ؕ	حَتّٰٓى	اِذَآ	اَقَلَّتْ
हवाओं को	ख़ुशख़बरी बनाकर	आगे-आगे	अपनी रहमत के	हत्ता कि	जब	वो उठा लेती हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَحَابًا	ثِقَالًا	سُقْنٰهُ	لِبَلَدٍ	مَّيِّتٍ	فَاَنْزَلْنَا	بِهِ
बादल	बोझल	चलाते/हांकते हैं हम उसे	तरफ़ ज़मीन	मुर्दा के	फिर उतारते हैं हम	साथ उसके

الْمَآءَ	فَاَخْرَجْنَا	بِهٖ	مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ	كَذٰلِكَ	نُخْرِجُ	الْمَوْتٰى
पानी को	फिर निकालते हैं हम	साथ उसके	हर तरह के फलों से	इसी तरह	हम निकालेंगे	मुर्दों को

لَعَلَّكُمْ	تَذَكَّرُوْنَ (57)	وَالْبَلَدُ	الطَّيِّبُ	يَخْرُجُ	نَبَاتُهٗ
ताकि तुम	तुम नसीहत पकड़ो	और ज़मीन	पाकीज़ा	निकलती है	नबातात उसकी

بِاِذْنِ	رَبِّهٖ ۚ	وَالَّذِيْ	خَبُثَ	لَا يَخْرُجُ	اِلَّا	نَكِدًا ؕ
इज़्न से	उसके रब के	और वो जो	ख़राब हो गई	नहीं निकलती (उससे)	मगर	नाक़िस

ع 7 5 14

كَذٰلِكَ	نُصَرِّفُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّشْكُرُوْنَ (58) ع	لَقَدْ	اَرْسَلْنَا
इसी तरह	हम फेर-फेर कर लाते हैं	निशानियां	उन लोगों के लिए	जो शुक्र करते हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

نُوْحًا	اِلٰى قَوْمِهٖ	فَقَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا	لَكُمْ
नूह को	तरफ़ उसकी क़ौम के	तो उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं है	तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ؕ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ	عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ (59)
कोई इलाह	उसके सिवा	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर	अज़ाब से	बड़े दिन के

قَالَ	الْمَلَاُ	مِنْ قَوْمِهٖٓ	اِنَّا	لَنَرٰىكَ	فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ (60)	قَالَ
कहा	सरदारों ने	उसकी क़ौम में से	बेशक हम	अलबत्ता हम देखते हैं तुझे	गुमराही में	खुली-खुली	उसने कहा

يٰقَوْمِ	لَيْسَ	بِيْ	ضَلٰلَةٌ	وَّلٰكِنِّيْ	رَسُوْلٌ	مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (61)
ऐ मेरी क़ौम	नहीं है	मुझ में	कोई गुमराही	और लेकिन मैं	रसूल हूं	रब्बल आलमीन की तरफ़ से

اُبَلِّغُكُمْ	رِسٰلٰتِ	رَبِّيْ	وَاَنْصَحُ	لَكُمْ	وَاَعْلَمُ	مِنَ اللّٰهِ
मैं पहुंचाता हूं तुम्हें	पैग़ामात	अपने रब के	और मैं ख़ैरख़्वाही करता हूं	तुम्हारी	और मैं जानता हूं	अल्लाह की तरफ़ से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿62﴾	اَوَعَجِبْتُمْ	اَنْ	جَآءَكُمْ	ذِكْرٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
जो	नहीं तुम जानते	क्या भला ताज्जुब हुआ तुम्हें	कि	आई तुम्हारे पास	एक नसीहत	तुम्हारे रब की तरफ़ से

عَلٰى رَجُلٍ	مِّنْكُمْ	لِيُنْذِرَكُمْ	وَلِتَتَّقُوْا	وَلَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿63﴾
एक शख़्स पर	तुम ही में से	ताकि वो डराए तुम्हें	और ताकि तुम बचो	और ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ

فَكَذَّبُوْهُ	فَاَنْجَيْنٰهُ	وَالَّذِيْنَ	مَعَهٗ	فِي الْفُلْكِ	وَاَغْرَقْنَا
तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तो निजात दी हमने उसे	और उन्हें जो	उसके साथ थे	कश्ती में	और ग़र्क़ कर दिया हमने

الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	قَوْمًا	عَمِيْنَ ﴿64﴾ ع	وَاِلٰى	ع 8 6 15
उनको जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	बेशक	थे वो	लोग	अंधे	और तरफ़	

عَادٍ	اَخَاهُمْ	هُوْدًا ؕ	قَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا لَكُمْ
आद के	उनके भाई	हूद को (भेजा)	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ؕ	اَفَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿65﴾	قَالَ	الْمَلَاُ	الَّذِيْنَ
कोई इलाह (बरहक़)	उसके सिवा	क्या भला नहीं	तुम डरते	कहा	सरदारों ने	जिन्होंने

كَفَرُوْا	مِنْ قَوْمِهٖٓ	اِنَّا	لَنَرٰىكَ	فِيْ سَفَاهَةٍ	وَّاِنَّا
कुफ़्र किया	उसकी क़ौम में से	बेशक हम	अलबत्ता हम देखते हैं तुझे	बेवक़ूफ़ी में	और बेशक हम

لَنَظُنُّكَ	مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿66﴾	قَالَ	يٰقَوْمِ	لَيْسَ	بِيْ
अलबत्ता हम गुमान करते हैं तुझे	झूठों में से	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	नहीं है	मुझ में

سَفَاهَةٌ	وَّلٰكِنِّيْ	رَسُوْلٌ	مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿67﴾	اُبَلِّغُكُمْ	رِسٰلٰتِ
कोई बेवक़ूफ़ी	और लेकिन मैं तो	रसूल हूं	रब्बल आलमीन की तरफ़ से	मैं पहुंचाता हू तुम्हें	पैग़ामात

رَبِّيْ	وَاَنَا	لَكُمْ	نَاصِحٌ	اَمِيْنٌ ﴿68﴾	اَوَعَجِبْتُمْ	اَنْ	جَآءَكُمْ
अपने रब के	और मैं	तुम्हारे लिए	ख़ैरख़्वाह हूं	अमानतदार हूं	क्या भला तअज्जुब हुआ तुम्हें	कि	आई तुम्हारे पास

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ذِكْرٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَلٰى رَجُلٍ	مِّنْكُمْ	لِيُنْذِرَكُمْ ؕ	وَاذْكُرُوْٓا
एक नसीहत	तुम्हारे रब की तरफ़ से	एक शख़्स पर	तुम में से	ताकि वो डराए तुम्हें	और याद करो

اِذْ	جَعَلَكُمْ	خُلَفَآءَ	مِنْۢ بَعْدِ	قَوْمِ	نُوْحٍ	وَّزَادَكُمْ	فِي الْخَلْقِ
जब	उसने बनाया तुम्हें	जानशीन	बाद	क़ौमे	नूह के	और उसने ज़्यादा दी तुम्हें	तख़्लीक़ में

بَصْۜطَةً ۚ	فَاذْكُرُوْٓا	اٰلَآءَ	اللّٰهِ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ (69)	قَالُوْٓا
फ़राख़ी/फैलाव	पस याद करो	नेअमतों को	अल्लाह की	ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	उन्होंने कहा

اَجِئْتَنَا	لِنَعْبُدَ	اللّٰهَ	وَحْدَهٗ	وَنَذَرَ	مَا	كَانَ
क्या आया है तू हमारे पास	कि हम इबादत करें	अल्लाह की	अकेले उसी की	और हम छोड़ दें	जिनकी	थे

يَعْبُدُ	اٰبَآؤُنَا ۚ	فَاْتِنَا	بِمَا	تَعِدُنَآ	اِنْ	كُنْتَ
इबादत करते	हमारे आबा ओ अजदाद	पस ले आ हमारे पास	उसे जो	तू धमकी देता है हमें	अगर	है तू

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (70)	قَالَ	قَدْ	وَقَعَ	عَلَيْكُمْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	رِجْسٌ
सच्चों में से	उसने कहा	तहक़ीक़	पड़ चुकी	तुम पर	तुम्हारे रब की तरफ़ से	नापाकी/गंदगी

وَّغَضَبٌ ؕ	اَتُجَادِلُوْنَنِيْ	فِيْٓ اَسْمَآءٍ	سَمَّيْتُمُوْهَآ	اَنْتُمْ
और ग़ज़ब	क्या तुम झगड़ते हो मुझसे	चंद नामों के बारे में	नाम रख लिया तुमने उनका	तुमने

وَاٰبَآؤُكُمْ	مَّا	نَزَّلَ	اللّٰهُ	بِهَا	مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ	فَانْتَظِرُوْٓا
और तुम्हारे आबा ओ अजदाद ने	नहीं	उतारी	अल्लाह ने	उसकी	कोई दलील	पस इंतिज़ार करो

اِنِّيْ	مَعَكُمْ	مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ (71)	فَاَنْجَيْنٰهُ	وَالَّذِيْنَ	مَعَهٗ
बेशक मैं	साथ तुम्हारे	इंतिज़ार करने वालों में से हूं	पस निजात देदी हमने उसे	और उन्हें जो	उसके साथ थे

بِرَحْمَةٍ	مِّنَّا	وَقَطَعْنَا	دَابِرَ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا
साथ रहमत के	अपनी तरफ़ से	और काट दी हमने	जड़	उनकी जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 9 8 16

وَمَا	كَانُوْا	مُؤْمِنِيْنَ (72) ع	وَاِلٰى	ثَمُوْدَ	اَخَاهُمْ	صٰلِحًا	قَالَ
और ना	थे वो	ईमान लाने वाले	और तरफ़	समूद के	उनके भाई	सालेह को (भेजा)	उसने कहा

يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا	لَكُمْ	مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ؕ	قَدْ
ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं है	तुम्हारे लिए	कोई इलाह (बरहक़)	उसके अलावा	तहक़ीक़

جَآءَتْكُمْ	بَيِّنَةٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ	هٰذِهٖ	نَاقَةُ	اللّٰهِ	لَكُمْ
आगई तुम्हारे पास	खुली दलील	तुम्हारे रब की तरफ़ से	ये	ऊंटनी है	अल्लाह की	तुम्हारे लिए

اٰيَةً	فَذَرُوْهَا	تَاْكُلْ	فِيْٓ اَرْضِ	اللّٰهِ	وَلَا	تَمَسُّوْهَا	بِسُوْٓءٍ
एक निशानी	पस छोड़दो उसे	वो चरती फिरे	ज़मीन में	अल्लाह की	और ना	तुम छूना उसे	साथ बुराई के

فَيَاْخُذَكُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (73)	وَاذْكُرُوْٓا	اِذْ	جَعَلَكُمْ	خُلَفَآءَ
वरना पकड़ लेगा तुम्हें	अज़ाब	दर्दनाक	और याद करो	जब	उसने बनाया तुम्हें	जानशीन

مِنْۢ بَعْدِ	عَادٍ	وَّبَوَّاَكُمْ	فِي الْاَرْضِ	تَتَّخِذُوْنَ	مِنْ سُهُوْلِهَا
बाद	आद के	और उसने ठिकाना दिया तुम्हें	ज़मीन में	तुम बनाते हो	उसकी नर्म मिट्टी से

قُصُوْرًا	وَّتَنْحِتُوْنَ	الْجِبَالَ	بُيُوْتًا ۚ	فَاذْكُرُوْٓا	اٰلَآءَ	اللّٰهِ
महल्लात	और तुम तराशते हो	पहाड़ों को	घरों में	पस याद करो	नेअमतों को	अल्लाह की

وَلَا	تَعْثَوْا	فِي الْاَرْضِ	مُفْسِدِيْنَ (74)	قَالَ	الْمَلَاُ	الَّذِيْنَ
और ना	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	मुफ़सिद बन कर	कहा	सरदारों ने	जिन्होंने

اسْتَكْبَرُوْا	مِنْ قَوْمِهٖ	لِلَّذِيْنَ	اسْتُضْعِفُوْا	لِمَنْ	اٰمَنَ	مِنْهُمْ
तकब्बुर किया	उसकी क़ौम में से	उन्हें जो	कमज़ोर समझे जाते थे	उनको जो	ईमान ले आए थे	उनमें से

اَتَعْلَمُوْنَ	اَنَّ	صٰلِحًا	مُّرْسَلٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	قَالُوْٓا	اِنَّا
क्या तुम जानते हो	बेशक	सालेह	भेजा हुआ है	अपने रब की तरफ़ से	उन्होंने कहा	बेशक हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِمَآ	اُرْسِلَ	بِهٖ	مُؤْمِنُوْنَ (75)	قَالَ	الَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا
साथ उस चीज़ क जो	वो भेजा गया	उस पर	ईमान लाने वाले हैं	कहा	उन लोगों ने जिनहोंने	तकब्बुर किया

اِنَّا	بِالَّذِيْٓ	اٰمَنْتُمْ	بِهٖ	كٰفِرُوْنَ (76)	فَعَقَرُوا
बेशक हम	जिस चीज़ पर	तुम ईमान लाए हो	उसका	इंकार करने वाले हैं	पस उन्होंने कोचें काट डालीं

النَّاقَةَ	وَعَتَوْا	عَنْ اَمْرِ	رَبِّهِمْ	وَقَالُوْا	يٰصٰلِحُ	ائْتِنَا
ऊंटनी की	और उन्होंने सरकशी की	हुक्म से	अपने रब के	और उन्होंने कहा	ऐ सालेह	ले आ हमारे पास

بِمَا	تَعِدُنَآ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (77)	فَاَخَذَتْهُمُ	الرَّجْفَةُ
जिसकी	तू धमकी देता है हमें	अगर	है तू	रसूलों में से	पस पकड़ लिया उन्हें	ज़लज़ले ने

فَاَصْبَحُوْا	فِيْ دَارِهِمْ	جٰثِمِيْنَ (78)	فَتَوَلّٰى	عَنْهُمْ	وَقَالَ	يٰقَوْمِ
तो वो हो गए	अपने घरों में	औंधे मुंह गिरने वाले	पस वो मुंह मोड़ कर चला गया	उनसे	और कहा	ऐ मेरी क़ौम

لَقَدْ	اَبْلَغْتُكُمْ	رِسَالَةَ	رَبِّيْ	وَنَصَحْتُ	لَكُمْ	وَلٰكِنْ
अलबत्ता तहक़ीक़	पहुंचा दिया था मेंने तुम्हें	पैग़ाम	अपने रब का	और ख़ैरख़्वाही की मैंने	तुम्हारी	और लेकिन

لَّا تُحِبُّوْنَ	النّٰصِحِيْنَ (79)	وَلُوْطًا	اِذْ	قَالَ	لِقَوْمِهٖٓ	اَتَاْتُوْنَ
नहीं तुम पसंद करते	नसीहत करने वालों को	और लूत को(भेजा)	जब	उसने कहा	अपनी क़ौम से	क्या तुम आते हो

الْفَاحِشَةَ	مَا	سَبَقَكُمْ	بِهَا	مِنْ اَحَدٍ	مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ (80)	اِنَّكُمْ
बेहयाई को	नहीं	सबक़त की तुम पर	साथ उसके	किसी एक ने	तमाम जहान वालों में से	बेशक तुम

لَتَاْتُوْنَ	الرِّجَالَ	شَهْوَةً	مِّنْ دُوْنِ	النِّسَآءِ ؕ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ
अलबत्ता तुम आते हो	मर्दों के पास	शहवत के लिए	अलावा	औरतों के	बल्कि	तुम	लोग हो

مُّسْرِفُوْنَ (81)	وَمَا	كَانَ	جَوَابَ	قَوْمِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْٓا
हद से गुज़रने वाले	और ना	था	जवाब	उसकी क़ौम का	मगर	ये कि	उन्होंने कहा

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَخْرِجُوْهُمْ	مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ	اِنَّهُمْ	اُنَاسٌ	يَّتَطَهَّرُوْنَ (82)	فَاَنْجَيْنٰهُ
निकाल दो उन्हें	अपनी बस्ती से	बेशक वो	कुछ लोग हैं	जो बहुत पाक बनते हैं	पस निजात दी हमने उसे

وَاَهْلَهٗۤ	اِلَّا	امْرَاَتَهٗ ۖ	كَانَتْ	مِنَ الْغٰبِرِيْنَ (83)	وَاَمْطَرْنَا
और उसके घर वालों को	सिवाए	उसकी बीवी के	थी वो	पीछे रहजाने वालों में से	और बरसाई हमने

عَلَيْهِمْ	مَّطَرًا ؕ	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُجْرِمِيْنَ (84) ع	ع 10 12 17
उन पर	एक बारिश	तो देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम	मुजरिमों का	

وَاِلٰى مَدْيَنَ	اَخَاهُمْ	شُعَيْبًا ؕ	قَالَ	يٰقَوْمِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	مَا
और तरफ़ मदयन के	उनके भाई	शोऐब को (भेजा)	उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो	अल्लाह की	नहीं है

لَكُمْ	مِّنْ اِلٰهٍ	غَيْرُهٗ ؕ	قَدْ	جَآءَتْكُمْ	بَيِّنَةٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
तुम्हारे लिए	कोई इलाह (बरहक़)	उसके सिवा	तहक़ीक़	आचुकी तुम्हारे पास	वाज़ेह दलील	तुम्हारे रब की तरफ़ से

فَاَوْفُوا	الْكَيْلَ	وَالْمِيْزَانَ	وَلَا	تَبْخَسُوا	النَّاسَ	اَشْيَآءَهُمْ
पस पूरा करो	नाप	और तोल को	और ना	तुम कम करके दो	लोगों को	चीज़ें उनकी

وَلَا	تُفْسِدُوْا	فِى الْاَرْضِ	بَعْدَ	اِصْلَاحِهَا ؕ	ذٰلِكُمْ	خَيْرٌ
और ना	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	बाद	उसकी इस्लाह के	ये	बेहतर है

لَّكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ (85) ج	وَلَا	تَقْعُدُوْا	بِكُلِّ صِرَاطٍ
तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	ईमान वाले	और ना	तुम बैठो	हर रास्ते पर

تُوْعِدُوْنَ	وَتَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	مَنْ	اٰمَنَ	بِهٖ
तुम धमकाते हो	और तुम रोकते हो	अल्लाह के रास्ते से	उसे जो	ईमान लाया	उस पर

وَتَبْغُوْنَهَا	عِوَجًا ج	وَاذْكُرُوْۤا	اِذْ	كُنْتُمْ	قَلِيْلًا
और तुम तलाश करते हो उस में	टेढ़ापन	और याद करो	जब	थे तुम	थोड़े

فَكَثَّرَكُمْ ۖ	وَانْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُفْسِدِيْنَ ﴿86﴾
तो उसने ज़्यादा करदिया तुम्हें	और देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम	फ़साद करने वालों का

وَاِنْ	كَانَ	طَآئِفَةٌ	مِّنْكُمْ	اٰمَنُوْا	بِالَّذِيْٓ	اُرْسِلْتُ
और अगरचे	है	एक गिरोह	तुम में से	जो ईमान लाया	उस चीज़ पर जो	भेजा गया हूं मैं

بِهٖ	وَطَآئِفَةٌ	لَّمْ	يُؤْمِنُوْا	فَاصْبِرُوْا	حَتّٰى
साथ जिसके	और एक गिरोह	नहीं	वो ईमान लाया	पस सब्र करो	यहां तक कि

يَحْكُمَ	اللّٰهُ	بَيْنَنَا ۚ	وَهُوَ	خَيْرُ	الْحٰكِمِيْنَ ﴿87﴾
फ़ैसला करदे	अल्लाह	दर्मियान हमारे	और वो	बेहतरीन है	फ़ैसला करने वालों में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION